VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS

(आज का विश्लेषण)

(14 April 2024)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC)
- भारत-चीन सीमा विवाद का मुद्दा
- MCQ

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC):

चर्चा में क्यों है?

- भारतीय अधिकारियों ने कहा कि 13 अप्रैल को होर्मुज की खाड़ी में ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड द्वारा इजरायल से संबद्ध कंटेनर जहाज एमएससी एरीस को जब्त किए जाने के बाद वे ईरानी अधिकारियों के संपर्क में हैं। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि पुर्तगाली ध्वज वाले जहाज पर चालक दल के 25 सदस्यों में से 17 भारतीय हैं।

- उल्लेखनीय है कि वायरल हुए एक वीडियो में ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड कमांडो को हेलीकॉप्टर से जहाज पर चढ़ते हुए दिखाया गया है। यह क्षेत्र में तनाव की नवीनतम वृद्धि है, जो पिछले कुछ महीनों से चरम पर है।

इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) क्या है?

- इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) ईरानी सशस्त्र बलों की एक बहु-सेवा प्राथमिक शाखा है जो आंतरिक और बाहरी खतरों से इस्लामी गणतंत्र ईरान की

रक्षा करने के लिए ईरान की पारंपरिक सेना से अलग है। जबकि ईरानी सेना देश की संप्रभुता की रक्षा करती है, IRGC का मुख्य उद्देश्य देश के सर्वोच्च नेता को सीधे रिपोर्ट करना है।

- अमेरिकी थिंक टैंक, काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस के अनुसार समय के साथ, IRGC ने ईरान की विदेश नीति को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इसने देश की अर्थव्यवस्था के बड़े हिस्से पर अधिकार का प्रयोग किया है।
- 2019 में, तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने IRGC को एक आतंकवादी संगठन के रूप में लेबल किया, जो अमेरिका द्वारा किसी अन्य सरकारी विभाग को विदेशी आतंकवादी संगठन के रूप में नामित करने का पहला उदाहरण था।

IRGC का गठन कब और क्यों किया गया?

- IRGC, जिसे "सिपाह-ए-पास्दारन" के नाम से भी जाना जाता है, 1979 की क्रांति के बाद अयातुल्लाह रुहोल्लाह खुमैनी द्वारा स्थापित सबसे शुरुआती क्रांतिकारी संस्थाओं में से एक था, जिसने शाह मोहम्मद रजा पहलवी की राजशाही को उखाड़ फेंका था।
- इस पास्दारन का प्राथमिक लक्ष्य इस्लामिक क्रांति और खुमैनी और उनके अनुयायियों द्वारा तैयार की गई धार्मिक-संवैधानिक व्यवस्था की रक्षा करना था।

- उल्लेखनीय है कि इस्लामिक क्रांतिकारियों को ईरान की नियमित सेना की वफादारी के बारे में चिंता थी, जो क्रांति होने तक शाही कमान के अधीन थी। उन्होंने पूरी तरह से धार्मिक नेता को समर्पित एक लड़ाकू बल बनाने की जरूरत थी। खुमैनी ने गार्ड्स को "इस्लाम के सैनिक" कहा।
- ईरान-इराक युद्ध (1980-88) ने पास्दारन को एक दुर्जेय लड़ाकू शक्ति में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस युद्ध के दौरान वैचारिक रूप से प्रेरित गार्डों की सक्रिय भागीदारी, जो दोनों पक्षों में महत्वपूर्ण हताहतों के बाद युद्धविराम के साथ संपन्न हुई, ने IRGC को ईरान के शासन के भीतर सबसे प्रभावशाली गुट के रूप में उभरने का मार्ग प्रशस्त किया।

IRGC की सैन्य ताकत और भूमिका?

- IRGC की कमान में लगभग 1,90,000 प्रशिक्षित सैनिक हैं, जो ईरान की नियमित सेना के आकार का लगभग आधा है। IRGC के पास एक थल सेना है, जो ईरान के 31 प्रांतों में फैली हुई है, एक वायु सेना और एक नौसेना है।
- इनमें से IRGC नौसेना, जो रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण होर्मुज जलडमरूमध्य सहित ईरान की समुद्री सीमाओं पर गश्त करती है, एक बहुत शक्तिशाली इकाई मानी जाती है।

- ईरान के अंदर, IRGC ने कई मौकों पर यह स्पष्ट किया है कि उनकी वफादारी रहबर काउंसिल के प्रति है। इसने शासन की विभिन्न संस्थाओं में गहराई से प्रवेश कर लिया है और अतीत में सुधारवादी राजनेताओं के खिलाफ खड़े हुए हैं।
- देश के बहार, IRGC की ज़िम्मेदारी इस्लामिक क्रांति के दुश्मनों को बेअसर करना और इस्लामिक शासन के प्रभाव का विस्तार करना है।

कुद्स फोर्स (जेरूसलम फोर्स):

- देश के बहार इस्लामिक क्रांति के दुश्मनों को बेअसर करने की जिम्मेदारी, IRGC की सबसे विशिष्ट शाखा कुद्स फोर्स (जेरूसलम फोर्स) को सौंपी गयी है। IRGC के इस कुद्स फोर्स' के पास पूरे पश्चिम एशिया में शिया नेटवर्क बनाने के लिए समर्पित संसाधन और ऊर्जा है। उल्लेखनीय है कि कुद्स फोर्स जनरल सुलेमानी के नेतृत्व में प्रमुखता से उभरी, जिन्होंने 1998 से 2020 में अपनी मृत्यु तक बल की कमान संभाली।
- 1982 में देश पर इजरायली आक्रमण के बाद लेबनान में एक इस्लामिक प्रतिरोध समूह की स्थापना की गई, जो बाद में हिजबुल्लाह बन गया, जो आज पश्चिम एशिया में ईरान का सबसे शक्तिशाली गैर-राज्य सहयोगी है।

- जब 2003 में अमेरिका ने इराक पर हमला किया, तो कुद्स फोर्स ने कब्जा करने वाले सैनिकों के खिलाफ शिया प्रतिरोध को फैलाने में मदद की, जिसके परिणामस्वरूप इराक में सैकड़ों अमेरिकी सैनिकों की मौत हो गई।
- जब सीरियाई गृहयुद्ध छिड़ गया, तो कुद्स फोर्स ने तुरंत सीरिया में शिया पवित्र स्थलों की रक्षा के बहाने और फिर शासन के दुश्मनों से लड़ने के बहाने अपने सैनिकों को सीरिया भेजा। कुद्स फोर्स ने, रूसियों और हिजबुल्लाह के साथ, राष्ट्रपति बशर अल-असद के शासन के पक्ष में गृह युद्ध को मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रतिरोध की धुरी:

- ईरान आज पश्चिम एशिया में कई इस्लामी मिलिशिया समूहों का समर्थन करता है, जिन्हें मोटे तौर पर 'प्रतिरोध की धुरी' कहा जाता है - फिलिस्तीनी क्षेत्रों में हमास और इस्लामी जिहाद हैं; यमन में हूती, लेबनान में हिजबुल्लाह और इराक और सीरिया में विभिन्न शिया लामबंदी ब्रिगेड।
- यदि गृह युद्ध ने ईरान को सीरिया में अपना प्रभाव बढ़ाने में मदद की, तो इसने इजरायल और ईरान के बीच छद्म युद्ध को भी बढ़ाया।

- उल्लेखनीय है कि इजराइल पश्चिम एशिया में अपने सामने आने वाली सभी सुरक्षा चुनौतियों के स्रोत के रूप में ईरान को देखता है, और ऐसा लगता है कि वह कम से कम अपने तत्काल पड़ोस में ईरान के प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

IRGC प्रॉक्सी समूहों के माध्यम से असममित युद्ध लड़ रहा है:

- उल्लेखनीय है कि जब IRGC मध्यपूर्व क्षेत्र को देखता है, तो उसे ईरान हर तरफ से प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ दिखाई देता है - खाड़ी के पार, सऊदीअरब- सुन्नी राजशाही हैं, जो अमेरिकी सहयोगी हैं; सीरिया और लेबनान की सीमाओं पर, इज़राइल- 'छोटा शैतान' स्थित है; और अमेरिका, 'महान शैतान' के पास पश्चिम एशिया में फैले कई ठिकानों पर हजारों सैनिक और उन्नत हथियार हैं। खाड़ी जल से परे, अमेरिकी युद्धपोत और विमान कैरियर स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ रहे हैं।
- ऐसे में मध्यपूर्व क्षेत्र में पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों पर काबू पाने और क्रांति की रक्षा के लिए, पास्दारन प्रॉक्सी के माध्यम से विषम रूप से युद्धरत है। फिर भी, IRGC की छद्म लड़ाई ने इस्लामिक गणराज्य ईरान को इज़राइल के साथ खुले युद्ध के कगार पर ला खड़ा किया है।

भारत-चीन सीमा विवाद का मुद्दा:

चर्चा में क्यों है?

- इंडियन एक्सप्रेस के अनुसार पूर्वी लद्दाख में संभावित तैनाती के लिए एक नई सेना डिवीजन बनाने की लंबे समय से लंबित योजना को जम्मू-कश्मीर (जम्मू-कश्मीर) और लद्दाख क्षेत्र के लिए बदलावों की एक श्रृंखला के हिस्से के रूप में इस साल लागू किए जाने की संभावना है।
- सेना उत्तरी कमान के अंतर्गत, पूर्वी लद्दाख में संभावित तैनाती के लिए '72 डिवीजन' को बढ़ाने पर विचार कर रही है, जिसे मूल रूप से पानागढ़ (पश्चिम बंगाल) में स्थित '17 माउंटेन स्ट्राइक कोर (एमएससी)' के तहत काम कर। एक डिवीजन में लगभग 14,000 से 15,000 सैनिक होते हैं।

सेना की स्ट्राइक कोर क्या होती है?

- उल्लेखनीय है कि स्ट्राइक कोर आक्रामक सीमा पार कार्रवाई के लिए जिम्मेदार है। वर्तमान में, सेना के पास चार स्ट्राइक कोर हैं - मथुरा स्थित '1 कोर', अंबाला स्थित '2 कोर', भोपाल स्थित '21 कोर' और पानागढ़ में '17 एमएससी'।

- हालाँकि, 2021 तक, केवल 17 एमएससी - चीन पर केंद्रित था। बाकी तीन का फोकस पाकिस्तान पर था।

चीन के साथ हालिया सीमा विवाद को लेकर सैन्य संरचना में परिवर्तन:

- चीन के साथ 2020 के सैन्य गतिरोध की पृष्ठभूमि में, चीन सीमा के लिए दो स्ट्राइक कोर रखने के लिए 2021 में एक पुनर्गठन किया गया था। चीनी खतरों से निपटने के लिए उत्तरी और पूर्वी सीमाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए '1 कोर' और '17 कोर' का पुनर्गठन किया गया। चीन के साथ सैन्य गतिरोध की पृष्ठभूमि में 17 कोर के कुछ बल को पूर्वी लद्दाख में भी तैनात किया गया था।
- उल्लेखनीय है कि जून 2020 में गलवान घाटी में हुई घातक झड़प के बाद भारत और चीन ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर लगभग 50,000-60,000 सैनिकों को तैनात कर रखा है।

- गलवान घाटी, पैंगोंग त्सो के उत्तर और दक्षिण तट और गोगरा-हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र जैसे प्रमुख घर्षण बिंदुओं में बफर जोन के निर्माण के साथ पिछले तीन वर्षों में

कुछ समाधान देखा गया है। लेकिन देपसांग मैदान और डेमचोक जैसे पहले से चले आ रहे घर्षण बिंदुओं पर अभी तक कोई तनाव शैथिल्य नहीं देखा गया है।

चीन के सीमावर्ती क्षेत्र में बुनियादी ढांचे का उन्नयन:

- इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है कि हाल के वर्षों में पूर्वी लद्दाख में बुनियादी ढांचे में सुधार किया गया है। इससे पहले, चीन ने भारत के ढीले रवैये के कारण उसे धमकाया और मजबूर किया और 1960 और 1990 के दशक के बीच लद्दाख क्षेत्र का एक हिस्सा हड़प लिया। अब स्थिति बदल गई है।
- यूपीए सरकार के तहत भारत ने निर्माण गतिविधियां शुरू कर की थीं। वर्तमान सरकार ने कनेक्टिविटी परियोजनाओं पर तेजी से काम किया है, जिसमें 260 किमी लंबी श्योक-डीबीओ सड़क भी शामिल है, जिसे युद्ध स्तर पर पूरा किया गया। अब डोरबुक से डीबीओ आठ घंटे में पहुंचा जा सकता है, जिससे भारतीय सैनिकों को कठिन इलाके में एक बड़ा फायदा मिलता है।
- दूर-दराज के इलाकों में भारत का बढ़ता प्रभुत्व उन प्रमुख कारकों में से एक रहा है, जिसने पीएलए को अलग तरह से प्रतिक्रिया करने के लिए मजबूर किया, जिसके तहत, भारत पर एलएसी पर अतिक्रमण करने और 2020 में गलवान गतिरोध को भड़काने का आरोप लगाया गया है।

- डीबीओ, फुक्चे और न्योमा में सभी छोड़े गए उन्नत लैंडिंग ग्राउंड (एएलजी) को फिर से सक्रिय करने के बाद हमारे विमानन बुनियादी ढांचे को भी उन्नत किया गया है। न्योमा एएलजी को कार्गो के साथ-साथ लड़ाकू जेट विमानों को संचालित करने में सक्षम एक पूर्ण हवाई क्षेत्र में अपग्रेड किया जा रहा है।

चीनी आक्रामकता का उचित जवाब:

- कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि भारतीय सेनाओं ने पूर्व-निर्धारित चीनी आक्रामकता का उचित जवाब दिया और चीन को 2020 में रणनीतिक जीत से वंचित कर दिया। चीन को दुस्साहस में शामिल होने की कीमत का एहसास कराया गया है।
- निश्चित रूप से, LAC पर गतिरोध की स्थिति बनी हुई है, हालांकि क्षेत्र में तनाव कम करने के लिए कोर कमांडर स्तर की 21वें दौर की बैठक फरवरी में संपन्न हुई थी।

MCQ

Q.1. हाल ही में चर्चा में रहे 'इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. इसने अदन की खाड़ी में एक इजरायली जहाज को कब्ज़ा किया जिसके चालक दाल में 17 भारतीय हैं।
2. यह 2019 से ही अमेरिका द्वारा एक आतंकवादी संगठन के रूप में घोषित है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b)

Q.2. हाल ही में चर्चा में रहे 'होर्मुज की खाड़ी' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) यह जलडमरूमध्य, दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण 'तेल चोकपॉइंट्स' में से एक है।

(b) यह लाल सागर को अरब सागर से जोड़ता है।

(c) यह जलडमरूमध्य, सऊदी अरब के दक्षिण में स्थित है।

(d) उपर्युक्त सभी सही हैं।

Ans. (a)

Q.3. हाल ही में चर्चा में रहे 'कुद्स फोर्स' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. कुद्स फोर्स का अर्थ जेरूसलम फोर्स भी होता है।
2. पश्चिम एशिया में ईरान के प्रॉक्सी मिलिशिया संगठनों को स्थापित करने एवं उनके संचालन की जिम्मेदारी इस की है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (c)

Q.4. चर्चा में रहा 'श्योक-डीबीओ सड़क' भारत के रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण किस राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में स्थित है?

(a) अरुणाचल प्रदेश में

(b) सिक्किम में

(c) जम्मू एवं कश्मीर में

(d) लद्दाख में

Ans. (a)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

Q.5. हाल ही में चर्चा में रही 'सेना की स्ट्राइक कोर' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सेना की स्ट्राइक कोर आक्रामक सीमा पार कार्रवाई के लिए जिम्मेदार है।
2. वर्तमान में, सेना के पास चार स्ट्राइक कोर हैं, जिसमे से तीन की तैनाती LAC पर की गयी है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (a)